

# डॉ. लेस्ली एलन, यहजेकेल, व्याख्यान 7, यरूशलेम की निंदा की गई लेकिन अंततः इसे बहाल किया जाएगा, यहजेकेल 14:12-16:63

© 2024 लेस्ली एलन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. लेस्ली एलन और यहजेकेल की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 7 है, यरूशलेम की निंदा की गई, लेकिन अंततः इसे बहाल किया जाएगा। यहजेकेल 14:12-16:63।

हम यहजेकेल में अपना अध्ययन जारी रखते हुए अध्याय 14, श्लोक 12 पर आते हैं, और 16वें अध्याय में आगे बढ़ते हैं। 14:12 वास्तव में है, यदि आप 14:12 से 15:8 तक आगे बढ़ते हैं, तो इस खंड में दो उपखंड हैं। नहीं, मैं वास्तव में यह कह रहा हूँ कि 14:12 से 15:8 एक उपखंड है, और फिर दूसरा लंबा अध्याय 16 है।

लेकिन 14:12 से 15:8 में, हमारे पास दो संदेश हैं, और हम यह उस सूत्र के कारण बता सकते हैं जो अलग-अलग खंडों को चिह्नित करता है। 14:12, प्रभु का वचन मेरे पास आया, और फिर 15.1, प्रभु का वचन मेरे पास आया। और अलग-अलग शुरुआत का एक संकेत है।

लेकिन समानांतर अंत भी हैं। अगर हम अध्याय 14 को देखें, तो हमें श्लोक 23 में मान्यता सूत्र मिलता है, और तुम जानोगे कि यह बिना कारण नहीं है कि मैंने इसमें जो कुछ भी किया है वह सब किया है। और यह तुम जानोगे कि मैं भगवान हूँ का एक रूपांतर है।

और वह बाद वाला सूत्र हमें अध्याय 15 और श्लोक 7 में मिलता है। तो ये हमारे समग्र खंड के पहले भाग के भीतर दो उपखंड हैं। आश्चर्य की बात नहीं है कि 14:12 से 15:8 की सामग्री, ये दो संदेश, यरूशलेम के पतन और उसके नागरिकों के भाग्य की अनिवार्यता है। और मान्यता सूत्र के कारण, जब ये चीजें हुईं, तो यह ईश्वर के दंडात्मक हस्तक्षेप का प्रमाण, ठोस सबूत होगा।

अध्याय 14 की आयत 13 से लेकर अध्याय 20 तक, एक तर्क प्रस्तुत किया गया है। इसमें चार काल्पनिक मामले प्रस्तुत किए गए हैं। और यह कह रहा है, बस मान लीजिए, बस मान लीजिए, बस मान लीजिए, बस मान लीजिए, चार काल्पनिक मामले।

पहला यह है कि मान लीजिए कि एक राष्ट्र ने परमेश्वर के विरुद्ध विश्वासघात किया, और परमेश्वर ने एक दैवी अकाल भेजा जिसमें लोग और जानवर मारे गए। बस मान लीजिए कि तीन पवित्र लोग, धर्मी लोग थे, जिन्होंने इसे होने से रोकने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की। और हमें श्लोक 14 में नूह, दानियेल और अय्यूब का उल्लेख मिलता है।

और यह मध्य व्यक्ति, नूह और अय्यूब के इन दो प्राचीन पात्रों के विपरीत, मध्य व्यक्ति, डैनियल, यहाँ अच्छा और बुद्धिमान राजा प्रतीत होता है, जिसे हम कनानी ग्रंथों में डैनियल के नाम से जानते हैं, इसलिए वह भी उतना ही पुराना है। लेकिन मान लीजिए कि उन्होंने ऐसा होने से रोकने

के लिए भगवान से प्रार्थना की। खैर, इस केस स्टडी में, वे अपने अच्छे जीवन, अपने स्वयं के जीवन को बचाने से परे सफल नहीं होते हैं, क्योंकि वे अच्छे जीवन हैं, वे अच्छे लोग हैं।

भगवान का मन बना हुआ है और उचित आधार पर, क्योंकि वे समग्र रूप से अविश्वासी लोग हैं। तो यह इस अविश्वासी राष्ट्र और उसके भाग्य के बारे में पहला काल्पनिक मामला है। इसका भाग्य निश्चित और अपरिवर्तनीय है।

और फिर हम आयत 15 और 16 में एक और तर्क पर आते हैं। मान लीजिए कि उस पापी राष्ट्र पर जंगली जानवरों का कब्जा हो गया है, जो न केवल विनाश का कारण बनते हैं बल्कि निवासियों के लिए खतरा भी बनते हैं। तब क्या? खैर, मध्यस्थता के बारे में क्या ख्याल है? एक बार फिर, जब जंगली जानवर परमेश्वर के तय किए गए न्याय का प्रतिनिधित्व करते हैं, तो मध्यस्थता का कोई मौका नहीं रह जाता।

यहाँ 15 और 16 में एक मार्मिक नोट पेश किया गया है, जिसमें बेटे या बेटियों, बेटे या बेटियों को बचाने में सक्षम न होने का उल्लेख है। और यह जानबूझकर मार्मिक है क्योंकि यह 597 युद्धबंदियों की ओर इशारा करता है, और उनमें से कई ने अपने परिवार के सदस्यों को पीछे छोड़ दिया था, जो यरूशलेम के पतन की स्थिति में शामिल होंगे। आखिरकार, वे बेटे और बेटियाँ शामिल होंगे, और क्या वे मर जाएँगे? क्या वे मर जाएँगे? और यहाँ, ठीक है, उनके लिए कोई उम्मीद नहीं है, वास्तव में।

संदेश में यह निहित है कि युद्ध बंदी यह दावा नहीं कर सकते कि उनके बच्चों को बख्शा जाना चाहिए। ऐसी कोई गारंटी नहीं दी जा सकती। और इसलिए, उस विशेष तर्क का एक दिलचस्प, मार्मिक पहलू यह है।

और फिर 17 से 18 तक, एक और अनुमान। अगर कोई सैन्य हमला हो जाए तो क्या होगा? और यही परिदृश्य इस 'क्या होगा अगर' के खेल में खेला जाता है। और एक बार फिर, बेटों और बेटियों के न बचने का यह गंभीर उल्लेख।

आखिरी महामारी या प्लेग है, और यह 19 से 20 तक है। और कोई भी बेटा या बेटी बच नहीं पाया। और इसलिए हम यरूशलेम के पतन और उसके निवासियों के अंत की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

बहुत गंभीर। लेकिन फिर, 21 से 23 तक, इसे मैसेंजर फॉर्मूला द्वारा पेश किया जाता है। और इसलिए, हम वास्तव में दूसरे संदेश पर आगे बढ़ रहे हैं।

ऐसा प्रभु परमेश्वर कहते हैं। लेकिन यह एक निरंतरता है क्योंकि यह कहता है, कितना अधिक? वे अनुमान, ठीक है, यह और भी बदतर होने जा रहा है यदि आप वास्तव में यरूशलेम और यहूदा के विश्वासघाती लोगों में इस स्थिति का पता लगाते हैं। परमेश्वर ने मनुष्यों और जानवरों को नष्ट करने के लिए न्याय, तलवार, अकाल, जंगली जानवरों और महामारी के चार घातक कृत्यों का उल्लेख किया है।

लेकिन यह एक रियायत है। मैंने आपकी चिंता सुनी; भगवान उन बेटों और बेटियों के लिए कह रहे हैं। और बेटे और बेटियाँ निर्वासन में आएँगे।

और आप सोच सकते हैं, ओह, हाँ, अनुग्रह की ट्रॉफी। ओह, कितना बढ़िया है कि उन्हें आखिरकार बख्श दिया गया। आप जानते हैं, वे इसके लायक नहीं थे।

ठीक वैसे ही जैसे मरने वाले लोग इसके लायक नहीं थे। लेकिन यह कितना बढ़िया है कि हमने अपने परिवार को फिर से एक साथ पा लिया है। प्रभु की स्तुति करो।

लेकिन अब एक अलग परिदृश्य खेला जा रहा है। क्योंकि जो बच्चे आते हैं, वे यरूशलेम के विनाश के गवाह बनकर आते हैं, हाँ, और यहूदा के भी। लेकिन वे यहूदा की अविश्वासयोग्यता के भी गवाह बनकर आते हैं।

और वे कहानियाँ सुनाने जा रहे हैं कि ऐसा क्यों हुआ क्योंकि लोगों ने ईश्वर के खिलाफ विद्रोह किया था। और इसलिए 597 के युद्ध के इन कैदियों को यरूशलेम के पतन को नैतिक रूप से उचित मानने के लिए मजबूर होना पड़ा। और वे इसके पीछे आध्यात्मिक तर्क को स्वीकार करेंगे।

उन्हें अकल्पनीय घटना को स्वीकार करना होगा और समझना होगा कि ऐसा होना ही था। उन्हें इन भयानक घटनाओं के लिए अपनी सहमति जताने के लिए मजबूर होना पड़ेगा, जिनके बारे में उन्होंने इतने लंबे समय तक इनकार किया था कि वे कभी भी घटित होंगी। और इसलिए, बेशक, इस समग्र संदेश में, फिर से झूठी उम्मीदों का खंडन है कि युद्ध के कैदी जल्द ही घर लौट आएँगे और अपनी मातृभूमि पर वापस लौट आएँगे।

नहीं, नहीं। अगर वे भाग्यशाली रहे, तो कुछ बचे हुए लोग उनके पास आएँगे और शायद उनके अपने परिवार के सदस्य भी। लेकिन यह भी एक सुखद पुनर्मिलन नहीं होगा।

उन बेटों और बेटियों को जो कहानियाँ सुनानी थीं, उनमें दुख था। अध्याय 15 में, हम एक अलग संदेश पर आते हैं। और उन तर्कों, उन क्या-अगर तर्कों के बजाय, यहाँ एक रूपक है जो इसके माध्यम से चलता है।

और यह एक रूपक है जो वाइनमेकिंग और बेल की खेती से जुड़ा है। और आप कहते हैं, अच्छा, आप बेल की खेती क्यों करेंगे? खैर, आप अंगूर चाहते थे। लेकिन इसका एक और उपयोग था क्योंकि अंगूर की फसल के बाद, छंटाई की जरूरत होती है।

और बेल की लकड़ी का भी इस्तेमाल होता था। बेल की छंटाई को ध्यान से इकट्ठा करके बंडलों में बांधा जाता था। और उन्हें खाना पकाने और खाने के लिए ईंधन के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।

और इसलिए यह बहुत अच्छा होगा। लेकिन वास्तव में, यही एकमात्र उपयोग था जिसके लिए आप उस लकड़ी का उपयोग कर सकते थे। आप इसके साथ कुछ और नहीं कर सकते थे।

आप इससे फर्नीचर नहीं बना सकते थे। लेकिन आप इसे आग पर रख सकते थे और इस पर अपना खाना पका सकते थे। और इसलिए उन लताओं को काट दिया गया, लेकिन छंटाई को फेंका नहीं गया।

उन्हें जलाऊ लकड़ी के रूप में इस्तेमाल किया जाएगा। उनका कोई और व्यावहारिक उपयोग नहीं था, लेकिन वे किसी काम के लिए, आग के लिए अच्छे थे। और, बेशक, यहाँ जो किया जा रहा है, वे पद 6 में लागू होते हैं, जैसे कि जंगल के पेड़ों के बीच बेल की लकड़ी, जिसे मैंने ईंधन के लिए आग में डाल दिया है ताकि मैं यरूशलेम के निवासियों को छोड़ दूँ।

वे मेरे लिए जलाऊ लकड़ी बन जाएंगे। और मैं उन्हें आग में डाल दूँगा। और जब बेबीलोन के लोग हमला करेंगे और उन लकड़ी की इमारतों को आग लगा देंगे, तो वे फंस जाएंगे, और वे भी मर जाएंगे।

आग उन्हें भस्म कर देगी। और तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। मैं देश को उजाड़ दूँगा क्योंकि उन्होंने विश्वासघात किया है।

और यही वह ढांचा है जो हमें मिला है। ये दो संदेश, 14:12 से 15:8 तक, वे पद 13 में विश्वासघात करके पाप करने वाली भूमि के बारे में इस अनुमान से शुरू होते हैं। और फिर यह उसी नोट पर समाप्त होता है।

मैं देश को उजाड़ दूँगा क्योंकि उन्होंने विश्वासघात किया है। इसलिए, इन दो अलग-अलग संदेशों के इर्द-गिर्द एक सावधानीपूर्वक रूपरेखा का उपयोग किया जाना चाहिए, जिनमें दोनों का संदेश यरूशलेम और उसके लोगों के अपरिहार्य पतन का एक ही है। लेकिन फिर हम अध्याय 16 पर आते हैं।

और यह एक लम्बा अध्याय है, अध्याय 16। यह यहजेकेल की पुस्तक का सबसे लम्बा अध्याय है - और यह एक बिल्कुल नया संदेश है।

यह एक रूपक लेता है और उसे लेकर शहर में जाता है। यह वास्तव में इसे बहुत विस्तार से विकसित और विस्तारित करता है। और फिर इसे यरूशलेम पर लागू किया जाता है।

और इसका प्रयोग वास्तव में रूपक से पहले श्लोक 12 में आता है। नश्वर, अध्याय 16 की श्लोक 2, नश्वर, यरूशलेम को उसके घृणित कर्मों से अवगत कराता है और कहता है, इस प्रकार प्रभु परमेश्वर यरूशलेम से कहता है। और फिर रूपक शुरू होता है, लेकिन यह बहुत स्पष्ट है कि यह यरूशलेम से संबंधित एक रूपक है।

और इसलिए, वास्तव में, जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, रूपक और व्याख्या का मिश्रण होता है। और यह यरूशलेम पर केंद्रित है। क्या आपको याद है कि पुस्तक के पहले भाग में यरूशलेम और उसके दोषों और विनाश की आवश्यकता के विरुद्ध जोर दिया गया था? खैर, अब हम उस पर वापस आते हैं।

14:12 से 15:8 तक, यह भूमि के बारे में था। पहले भाग में भूमि का दूसरा विषय था, लेकिन अब हम एक बार फिर यरूशलेम की ओर लौट रहे हैं। और यह सब सिख्योन धर्मशास्त्र के विरुद्ध एक तीखा हमला है।

सिख्योन धर्मशास्त्र काम नहीं करता। ऐसा लगता है कि यह कुछ समय के लिए काम करता है, लेकिन अब यह काम नहीं करेगा। आप उससे आगे निकल चुके हैं।

आप इससे आगे निकल गए हैं, और यह अब आपके लिए काम नहीं कर सकता। और हमारे पास एक बेवफा पत्नी की छवि है जिसे सज़ा दी जाती है। लेकिन यह उससे कहीं ज़्यादा है।

क्योंकि वास्तव में, जैसे-जैसे अध्याय आगे बढ़ता है, आप देखते हैं कि यह दो मुख्य भागों में विभाजित हो जाता है, और अंततः, आप इसी अध्याय में ज्वार के मोड़ पर पहुँच जाते हैं। और इसलिए, अध्याय का बड़ा हिस्सा स्पष्ट रूप से आगे की ओर देख रहा है या 587 की ओर देख रहा है, लेकिन एक निश्चित बिंदु पर, आप पीछे की ओर देख रहे हैं। आप 587 की ओर देख रहे हैं, और वहाँ उद्धार का संदेश है।

यह अध्याय के इस साहित्यिक रूप से न्याय का संदेश मात्र नहीं है; यह उद्धार के संदेश की ओर आगे बढ़ रहा है। और इसलिए, श्लोक 53 कहेगा, मैं उनका भाग्य पुनःस्थापित करूँगा। मैं उनका भाग्य पुनःस्थापित करूँगा।

और इसमें यरुशलम भी शामिल है। यरुशलम समेत तीन शहरों के बारे में बात करते हुए, मैं उनकी किस्मत को फिर से संवारूँगा। और इसलिए, यह 587 की उस महान आपदा से परे दिखता है।

पुस्तक में पहले दिए गए यहजेकेल के कुछ संदेश पहले से ही इस बात को ध्यान में रखते हैं कि 587 के बाद क्या होने वाला है। और ऐतिहासिक रूप से, वे उस नए संदेश से संबंधित प्रतीत होते हैं जो यहजेकेल 587 के बाद ला सकता था। लेकिन यहाँ, इसे एक पूरक के रूप में वापस रखा गया है।

यहजेकेल एक पूरक लिखने में सक्षम था। एक सुखद अंत था या अपेक्षाकृत सुखद अंत था, क्या मैं कह सकता हूँ, क्योंकि यहजेकेल उस निर्णय को एक छोटे से जे के साथ लाना पसंद करता है जब वह पुस्तक के पहले भाग में उद्धार के अपने भविष्यवाणियों के बारे में बात करता है।

वैसे भी, यह निश्चित रूप से पहले भाग की तुलना में अधिक सकारात्मक संदेश है। और पूरे रास्ते में यरुशलम को अलंकारिक रूप से संबोधित किया गया है। आपका मूल, आपका जन्म, आपके पिता, आपकी माँ।

और यह एक अलंकारिक संबोधन है। और वास्तव में, इस पहले भाग में, यह 597 युद्ध बंदी हैं जो यहजेकेल की बातें सुन रहे हैं। अब, जब न्याय की भविष्यवाणी होती है, तो हम दूसरे दिन कह रहे थे कि यह दो मुख्य भागों में विभाजित होती है।

यह सिर्फ सज़ा के बारे में बात हो सकती है। लेकिन ज़्यादातर मामलों में, यह आरोप के बयान से शुरू होता है जो फ़ैसले को सही ठहराता है। और अक्सर, एक ऐसा कारण भी होता है जो आरोप को आने वाली सज़ा से जोड़ता है।

लेकिन कभी-कभी, न्याय की भविष्यवाणी उससे भी आगे बढ़ जाती है। या यूँ कहें कि यह एक नई शुरुआत जोड़ती है। और ऐसा होता है, उदाहरण के लिए। इसका एक उदाहरण अध्याय 5 में यशायाह का दाख की बारी का गीत है, जहाँ यहूदा निश्चित रूप से उसकी दाख की बारी है, और इसे नष्ट कर दिया जाएगा।

और इसलिए, यह निश्चित रूप से यहूदा के लोगों के लिए आपदा का एक रूपक है। और एक आरोप है कि दाख की बारी के इस रूपक में, इसने अच्छे अंगूर नहीं पैदा किए। इसने अच्छे अंगूर नहीं पैदा किए, बल्कि केवल खराब मुरझाए हुए अंगूर पैदा किए जो खाने लायक नहीं थे।

और इसलिए यह आरोप का रूप ले लेता है। और इसे शाब्दिक रूप में थोड़ा और समझाया गया है। लेकिन उससे पहले, उससे पहले, सज़ा से पहले, आरोप से पहले, एक अतिरिक्त अंश आता है, जो उस दाख की बारी पर परमेश्वर की देखभाल की बात करता है।

और इसलिए यह उस अंगूर के बगीचे के बारे में बताता है जिसे मालिक ने खोदा और पत्थरों को साफ किया, उसमें बढ़िया बेलें लगाईं, उसके बीच में एक निगरानी टावर बनाया, उसमें एक शराब की टोकरी खोदी। उसे उम्मीद थी कि उसमें अंगूर पैदा होंगे। लेकिन फिर आरोप का धमाका हुआ, उसमें जंगली अंगूर पैदा हुए जो खाने लायक नहीं थे।

लेकिन यह जानबूझकर की गई प्रस्तावना है ताकि जब आप आरोप पर आएँ, और जब आप रूपक से परे इसके बारे में सोचें, तो यह चेहरे पर तमाचा जैसा लगे। परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए जो कुछ भी किया था, उसके बाद उसने कल्पना की कि वे पीछे हट जाएंगे और वाचा का वह फल नहीं पैदा करेंगे जो वह चाहता था। और इसलिए यह बहुत बड़ा संदेश है।

और फिर एक और मामला, बेशक, और भी अधिक प्रसिद्ध, उत्पत्ति 2 और 3 की कथा में है। उत्पत्ति के अध्याय 3 में, हमें आरोप है कि हमें बगीचे से बाहर निकाल दिया गया, और इसी तरह की अन्य सजाएँ दी गईं। लेकिन शुरुआत में, हमें उन खूबसूरत चीज़ों के बारे में पता चलता है जो परमेश्वर ने आदम और हव्वा के लिए की थीं। उसने उनके लिए एक बगीचा प्रदान किया।

उसने उनके लिए भोजन का प्रबंध किया। उसने पानी का प्रबंध किया। यह बहुमूल्य पत्थरों का स्थान था।

भगवान ने उनके लिए सब कुछ किया था। और यह एक अद्भुत जीवन था। और फिर भी उनके चेहरे पर एक तमाचा था कि उन्होंने पलटकर उसकी अवज्ञा की।

और इसलिए, ये दो उदाहरण हैं। यहाँ, हमें यहजेकेल के अध्याय 16 में तीसरा उदाहरण मिलता है। और यह एक तरह की सिंढेला कहानी है, गरीबी से अमीरी की ओर बढ़ना।

यहाँ एक अनचाही बच्ची है जो जंगल में उजागर हो जाती है, लेकिन अंततः वह रानी बन जाती है। तो यही कहानी है। और यह कहती है कि यह बच्ची बहुत गरीब नस्ल की थी।

तुम्हारे पिता एमोरी थे और तुम्हारी माँ हिती। तुम्हारा जन्म कनानियों के देश में हुआ था। और यह एक तथ्य है कि यरूशलेम इस्राएल के राज्य में बहुत बाद में आया, केवल दाऊद के समय में।

इससे पहले इस पर कभी विजय नहीं पाई गई थी। यह एक कनानी बस्ती थी, इसलिए इसकी जड़ें बुतपरस्ती की थीं।

और इसलिए, यह चेतावनी नोट है: यरूशलेम से सावधान रहें। आपको लगता है कि यह एक अद्भुत शहर है, लेकिन उन बुतपरस्त मूल के बारे में सोचें। इसने आपको निराश कर दिया है।

यरूशलेम में कुछ बुरे जीन हैं, है न? और शायद वे किसी न किसी स्तर पर खुद को दिखाएँगे। और इस बुतपरस्त पृष्ठभूमि का उल्लेख करके यही सोचा जाता है। यह एक तरह का मूल पाप है, जो किसी समय फिर से प्रकट होने वाला है।

खैर, इस बच्ची को जन्म के तुरंत बाद और दाईं द्वारा उसे सामान्य देखभाल देने से पहले ही छोड़ दिया गया था। और वह मौत के मुंह में समा गई। लेकिन भगवान वहाँ से गुजरे और उन्होंने एक अच्छे सामरी की भूमिका निभाते हुए उसे बचाया।

और यह बहुत अच्छा था। इसलिए वह मरी नहीं। वह भगवान के आशीर्वाद के तहत फलती-फूलती रही।

और साल बीत गए और भगवान उससे फिर मिले। और अब वह यौन रूप से परिपक्व हो गई थी। और उसने क्या किया? भगवान ने उससे शादी कर ली।

उसने इस खूबसूरत महिला से शादी की। और उसने विवाह का अनुबंध किया। और उसके पति के रूप में, उसने उसे बेहतरीन कपड़े, गहने और भोजन मुहैया कराया।

और वह रानी बन गई। और, बेशक, ऐतिहासिक रूप से, उसकी रानीपन यरूशलेम की शाही शहर के रूप में स्थिति को दर्शाता है। लेकिन यह ईश्वर की कृपा थी।

यह इस कहानी की सुखद शुरुआत थी। लेकिन हमें लगता है कि यह किसी बुरे मोड़ पर जा रही है। और ऐसा ही होता है।

और 15 से 34 में, अब आरोप आता है। क्योंकि यरूशलेम यौन रूप से बेवफ़ा हो गई। वास्तव में, यहोवा की यह पत्नी एक कामुक स्त्री बन गई।

और 15 से 22 में, इस रूपक के पीछे की वास्तविकता इस बिंदु पर एक रूपक है जो धार्मिक विश्वासघात और यरूशलेम के जीवन जीने के तरीके में मूर्तिपूजक पूजा के आयात को दर्शाता है।

कनानी धर्म को अपनाया गया। यहां तक कि बाल बलिदान के साथ भी, भगवान की कृपा को भुला दिया गया।

उसके उपहार अन्य देवताओं पर लुटाए गए जो उसके नए प्रेमी थे, इसलिए यह धार्मिक अविश्वास है। 23 से 34 में, यौन विश्वासघात अन्य देशों, मिस्र, असीरिया और अंततः चाल्डिया या बेबीलोनिया के साथ राजनीतिक उलझन को दर्शाता है।

यरूशलेम को शाही प्रशासन का केंद्र माना जाता है। यहीं पर शाही अधिकारी रहते थे और यहीं पर सरकार का मुख्यालय था।

और इसलिए, यह यरूशलेम की गलती थी। यरूशलेम ने विदेश नीति को नियंत्रित किया। और श्लोक 20 में कहा गया है कि यरूशलेम के अपमानजनक व्यवहार से पलिशती भी भयभीत थे।

कल्पना कीजिए। भविष्यवक्ताओं ने अक्सर देखा, खासकर यशायाह ने, भविष्यवक्ताओं ने अक्सर विदेशी गठबंधनों को इस्राएल के परमेश्वर में विश्वास की कमी के संकेत के रूप में देखा। और ऐसा ही यहाँ भी है।

और इसलिए, बेवफ़ा पत्नी की उपमा का इस्तेमाल राजनीतिक रूप से हाल ही में राजनीतिक भागीदारी को संदर्भित करने के लिए किया जाता है, जो अन्य शक्तिशाली राष्ट्रों की ओर मुड़ते हैं, जैसे कि वे यहोवा के बजाय यरूशलेम के उद्धारकर्ता हो सकते हैं। इस बिंदु पर यशायाह की पुस्तक से बहुत कुछ सीख लिया गया है। और इस बीच, भगवान क्रोधित हो गए, उचित रूप से क्रोधित, श्लोक 26 में।

तो, आपको भगवान से प्रतिक्रिया मिलती है। आपने मिस्रियों, अपने कामुक पड़ोसियों के साथ वेश्यावृत्ति की, मुझे क्रोधित करने के लिए अपनी वेश्यावृत्ति को बढ़ाया। और इस बीच, यरूशलेम एक हारे हुए देश में बदल गया, जिसने अपने शाही साझेदारों को श्रद्धांजलि के रूप में अपनी ईश्वर प्रदत्त संपत्ति खो दी।

और फिर, 35 से 43 के पहले आधे भाग तक, आप इसलिए शुरू करते हैं। और यह संकेत है कि हम आरोप से दंड की ओर बढ़ रहे हैं जो उस व्यक्ति पर पड़ना चाहिए जिसने गलत किया है। और इसलिए, आरोप का एक संक्षिप्त सारांश है, टेप को राजनीतिक विश्वासघात से वापस इज़राइल के भगवान के प्रति धार्मिक विश्वासघात तक ले जाता है।

और विडंबना यह है कि उसके राजनीतिक प्रेमी उसके खिलाफ हो जाएंगे। जल्द ही, वे व्यभिचार के लिए ईश्वरीय फैसले को लागू करेंगे। पत्नी, व्यभिचारी पत्नी को मरना होगा, पत्थर मारकर मरना होगा।

और बच्चों की हत्या के लिए क्योंकि वहाँ बाल बलि से जुड़ी धार्मिक बेईमानी थी। और ये प्रेमी, ये विदेशी प्रेमी, यरूशलेम के अच्छे कपड़े उतार देते थे। वे उसे मार देते थे, और उसके घर को आग लगा देते थे।



इस तरह, परमेश्वर अपने धार्मिक क्रोध को संतुष्ट करेगा और न्याय होगा। और वह यरूशलेम को उसके गलत कामों के लिए जिम्मेदार ठहराएगा। यरूशलेम का पतन यरूशलेम की गलती होगी।

हम 43a--43b से आगे बढ़कर 58 पर आते हैं। वह समय आ गया जब न्याय के उस सन्देश को एक नए, अधिक सकारात्मक, भिन्न सन्देश से प्रतिस्थापित किया जा सकता था।

और अब भी उन शर्मनाक बुरी बातों का साया छाया हुआ है जो अब अतीत में हैं। लेकिन यह नयापन 53 में इस सकारात्मक कथन के साथ प्रकट होता है: मैं उनके भाग्य को बहाल करूँगा। और यह सदोम और सामरिया और यहूदा की बात कर रहा है।

और यह और भी अधिक प्रासंगिक 53बी कहता है, और मैं उनके साथ-साथ तुम्हारा भी भाग्य बहाल करूँगा। और इसलिए, दो अन्य दुष्ट शहरों, सदोम और सामरिया के साथ यह अजीब स्थान है। लेकिन यह सकारात्मक संदेश है: मैं तुम्हारा भाग्य बहाल करूँगा।

और इसलिए, अब हम आगे बढ़ चुके हैं। हम 587 से आगे बढ़ चुके हैं। और जो कुछ हुआ है, वह अब अतीत की बात हो चुकी है।

लेकिन यह अभी भी पूरी तरह से सकारात्मक नहीं है। यहजेकेल के सकारात्मक भविष्यवाणियों की एक विशेषता है कि वह चेतावनी के रूप में कुछ नकारात्मक के लिए जगह बनाता है। लेकिन 587 आ गया और चला गया।

निर्वासितों का एक बड़ा समूह 597 के युद्ध बंदियों में शामिल हो गया था। अब, यहजेकेल के लिए एक और अधिक सकारात्मक संदेश देने का समय आ गया है। लेकिन खास तौर पर, वह वादे को चुनौती के साथ मिलाना पसंद करता है।

और यह चुनौती, यह छोटे जे के साथ निर्णय है। क्योंकि सभी निर्वासितों ने अपने विश्वासघात के इतिहास के निशान पहने थे। और ऐसे निशान हैं जिन्हें वे निर्वासन से वापस जाने पर भूमि पर वापस ले जाएंगे। और निशान पीड़ा के भावनात्मक निशान थे।

लेकिन वे 587 से पहले किए गए पापों की आध्यात्मिक याद भी दिलाते थे, जिसके कारण उन्हें उस भयानक त्रासदी से गुजरना पड़ा था। वास्तव में, उनके लिए उन घावों, उन मनोवैज्ञानिक घावों को याद रखना, और उन्हें याद रखना आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ था। यरूशलेम के इतिहास के पीछे छिपे बुरे व्यवहार के इतिहास को याद रखना और उसे कभी न भूलना आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ बात थी।

मुझे रुडयार्ड किपलिंग की एक कविता याद आती है जिसमें बार-बार यह पंक्ति दोहराई जाती है, कहीं हम भूल न जाएं, कहीं हम भूल न जाएं। और यहाँ इस संदेश की भावना बहुत अच्छी तरह से है। और उन्हें अपने अतीत के लिए पश्चाताप करना चाहिए।

और उस पश्चाताप में शर्म और पछतावे के तत्व शामिल होंगे जो फिर से वही गलत रास्ते पर चलने से रोकने का काम करेंगे। और इस बिंदु पर, मैं प्रेरित पौलुस के बारे में सोचता हूँ, क्योंकि ईसाइयों के खिलाफ उनके पिछले उत्पीड़न के कारण, एक समय पर उन्होंने खुद को पापियों का प्रमुख या सबसे बड़ा पापी कहा था, 1 तीमुथियुस 1.5। और वह कभी नहीं भूला कि उसने उन ईसाइयों को कैसे सताया था। और इस स्मृति ने अनुचित अनुग्रह की भावना को मजबूत किया।

और यह एक प्रेरित के रूप में परमेश्वर के प्रति उनकी निरंतर निष्ठा में एक सहायक कारक था। और इसलिए, यह निर्वासितों के लिए होना था। इसलिए यह यरूशलेम के लोगों के लिए भी होना था जब वे फिर से घर वापस जा रहे थे।

उनके पूर्वजों के बीच अतीत में दुश्मनी थी। और उन्हें यह कभी नहीं भूलना चाहिए। यरूशलेम में बुतपरस्ती की गहरी जड़ें थीं।

और उनके पास बुरे जीन थे जो बाद के वर्षों में सामने आए। सावधान, सावधान, ऐसा दोबारा न हो। और इसलिए इस बहाली के संदेश का यह छाया पक्ष है।

यहूदा में दो और शहर थे जिनकी बदनामी थी। एक था सदोम और दूसरा था सामरिया। और अगर तुम यरूशलेम से होते तो तुम उन दोनों का जिक्र करने से कतराते।

लेकिन भगवान, चौंकाने वाली बात यह है कि उन्हें यरूशलेम के साथ रखता है। और इसलिए आपको लगता है कि वे बुरे हैं। खैर, आपके बारे में क्या? आपके बारे में क्या? और यहजेकेल उन्हें एक ही परिवार के सदस्य कहते हैं।

सदोम और सामरिया यरूशलेम की बहनें हैं। वे यरूशलेम की बदसूरत बहनें थीं। लेकिन वास्तव में, यरूशलेम अपने विश्वास को नकारने और बुतपरस्ती को अपनाने में उन सभी में सबसे बदसूरत निकला।

वह परिवार में सबसे बुरी थी। ठीक है। और फिर यह सब हमें 58 तक ले जाता है।

और फिर अध्याय का अंतिम भाग 59 से 63 में है। और यह अध्याय का एक उपसंहार है। यह पीछे की ओर देखता है और इसका एक सामान्य सारांश है।

पुस्तक में इसी तरह के अन्य पोस्टस्क्रिप्ट भी हैं। अपनी टिप्पणी में, मैंने तर्क दिया है कि ये पोस्टस्क्रिप्ट निर्वासन के बाद के संपादकों द्वारा जोड़े गए थे, जो उन्हें यहजेकेल के अपने शब्दों में जोड़ने के लिए प्रेरित हुए थे। और यह पोस्टस्क्रिप्ट वापस लौटे निर्वासितों को अपने अतीत को याद रखने की आवश्यकता को दोहराता है, न कि उन्हें अपंग करने के तरीके से, न कि उन्हें नीचे खींचने के लिए, बल्कि भगवान की कृपा के प्रति उनके ऋण की भावना को अधिकतम करने के साधन के रूप में।

कल्पना कीजिए, इन सब के बाद, भगवान ने हमें माफ कर दिया और हमें वापस ले आए। निर्वासितों को कभी नहीं भूलना था कि वे पापी थे जिन्हें अनुग्रह द्वारा बचाया गया था। और भगवान भी, याद रखने में लगे हुए थे।

वह यरूशलेम के साथ अपनी मूल विवाह वाचा को याद करने जा रहा था और उसे नवीनीकृत करने जा रहा था। और इस तरह पुरानी सिष्योन परंपरा फिर से सच होने जा रही थी। और वास्तव में, परमेश्वर के साथ इस नए रिश्ते के एक उदाहरण के रूप में, निर्वासित, लौटने के बाद, न केवल यहूदा लौटेंगे, बल्कि सामरिया और सदोम के क्षेत्रों पर भी कब्ज़ा करेंगे।

वे एक बार फिर से वही पुराना यूनाइटेड किंगडम बन जाएंगे। यरूशलेम को उस वादा किए गए देश की राजधानी बनना था जिसमें ये आतंकवादी शामिल थे। और एक बार फिर, मैं पॉल द्वारा लिखी गई बातों के बारे में सोचता हूँ।

और फिर, यह 1 तीमुथियुस 1 में है, लेकिन अब यह पद 14 में है। पौलुस ने उस अनुग्रह के बारे में बात की जो उसके जीवन में उमड़ पड़ा। और वह ऐसा एक ऐसे व्यक्ति के रूप में बोलता है जो सबसे बड़ा पापी था, जैसा कि उसने उसी अध्याय में पद 5 में कहा था।

अनुग्रह उसके जीवन में उमड़ पड़ा। और इस अध्याय के अंत में भी यही इरादा है जहाँ पाप बहुत बढ़ गया था, और अनुग्रह और भी अधिक बढ़ जाना था। और यही वह जगह है जहाँ यह अध्याय हमें ले जाता है।

अब, संक्षेप में कहें तो, यहजेकेल 16 पढ़ने के लिए एक अच्छा अध्याय नहीं है। यह एक परेशान करने वाला अध्याय है। यह अपनी यौन स्पष्टता के कारण चौंकाने वाला है।

और मैं आपको चेतावनी देता हूँ, अगर आपने हिब्रू सीखी है, तो आपको यह और भी चौंकाने वाला लगेगा। अंग्रेजी संस्करणों में इसे कम महत्व दिया गया है। हमारे अंग्रेजी संस्करणों में अब लिंगों का उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन हिब्रू पाठ में वे मौजूद हैं।

समकालीन पाठकों के लिए यह अध्याय निश्चित रूप से राजनीतिक रूप से सही नहीं है। इस अध्याय की पृष्ठभूमि में होशे के शुरुआती अध्याय हैं। होशे की प्रतीकात्मक कार्रवाई को याद रखें; उसे शादी करने के लिए कहा जाता है, लेकिन शादी विफल साबित होती है।

और फिर तलाक की बात होती है, लेकिन फिर अंततः फिर से विवाह होता है। और इसलिए यह परिदृश्य होशे के जीवन में खेला गया था। और इसलिए, यरूशलेम के लिए इसकी एक याद और अनुप्रयोग है और, यह एक रूपक के रूप में बहुत अधिक विकसित है, लेकिन इसकी जड़ें होशे की शिक्षाओं में वापस जाती हैं, उत्तरी राज्य में वापस।

और रूपक का मतलब ईश्वर और इस्राएल के बीच के रिश्ते में उतार-चढ़ाव के बारे में बात करना था। बेशक, यरूशलेम रूपक का केंद्र बन गया है, दोनों इसलिए क्योंकि यहजेकेल एक पुजारी था और अपना सारा जीवन वहीं बिताया था, लेकिन इस बात पर लगातार जोर दिया जा

रहा था कि यरूशलेम का पतन होगा, जैसा कि 587 में हुआ था। और यह सब कुछ के अंत का संकेत है।

जब यरूशलेम गिरता है, तो यह अंत होता है। भूमि अब नहीं रहती, राजशाही अब नहीं रहती, मंदिर अब नहीं रहता, और यदि यरूशलेम खो जाता है तो सब कुछ चला जाता है। अब, ऐसा होता है कि जिस बात ने यहजेकेल को इस रूपक के संदर्भ में फिर से सोचने के लिए प्रोत्साहित किया, वह यह था कि हिब्रू में, शहर हमेशा स्त्रैण होते हैं।

शहर हमेशा स्त्रैण होते हैं। और इसलिए, भाषाई रूप से, यरूशलेम को विवाह साथी, यहोवा की पत्नी बनाना एक तरह से काफी स्वाभाविक था। और फिर, यहजेकेल यरूशलेम के गैर-इस्राएली मूल का भी हवाला दे सकता था, जो दाऊद द्वारा इसे जीतने से पहले इतने लंबे समय तक एक यबूसी शहर था।

लेकिन यह रूपक के विस्तार के लिए उपयुक्त है। और फिर, जहाँ तक पत्नी की सज़ा का सवाल है, व्यभिचार टोरा में, लेविटस 20 और व्यवस्थाविवरण 22 में मृत्युदंड का अपराध था, और इसलिए यरूशलेम के खिलाफ़ यह भयानक सज़ा दी गई। और यह कानूनी प्रथा, यह पुरोहिती प्रथा, रूपक में अपना रास्ता खोज लेती है क्योंकि यह विकसित होती है।

जब हमने यह कहा, तब भी हमें यह अध्याय समग्र रूप से पसंद नहीं आया, क्योंकि इसमें एक भयावह पहलू है। इसमें एक हिंसक, अश्लील-सी लगने वाली स्पष्टता है जो पूरे अध्याय में व्याप्त है, और यह निश्चित रूप से अच्छा नहीं है, और कोई भी व्यक्ति चर्च में इन आयतों को नहीं पढ़ेगा। लेकिन ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टि से, इसकी अपनी सेटिंग में एक आवश्यक स्पष्टता है।

निर्वासित लोग यरूशलेम को परमेश्वर का नगर, परमप्रधान का पवित्र निवास मानते थे। परमेश्वर उसके बीच में था। उसे कभी नहीं हटाया जा सकता था।

भजन 46 में यही कहा गया है, जिसे हमने पिछले व्याख्यान में पढ़ा था। यह वही व्यक्त कर रहा था जिसे हम सिख्योन धर्मशास्त्र कहते हैं। यहजेकेल को इस पारंपरिक प्रतिमान को तोड़ना था, जो यहूदी सोच में बहुत गहराई तक समाया हुआ था।

सबसे बढ़कर, यह कायम रहना चाहिए। यरूशलेम का कभी पतन नहीं होना चाहिए। इस प्रतिमान को तोड़ने के लिए, उसे युद्धबंदियों को यह समझाने के लिए अन्य परंपराओं और रीति-रिवाजों का उपयोग करना होगा, साथ ही चौंकाने वाली भाषा का, स्पष्ट रूप से चौंकाने वाली भाषा का उपयोग करना होगा कि यरूशलेम का पतन होना ही था।

इसका पतन एक दिव्य अपरिहार्यता थी। इस्राएल के लोग आमतौर पर यौन मामलों के बारे में बात करने में विक्टोरियन लोगों की तरह ही शर्मीले थे, और इसलिए यहजेकेल की भाषा को और भी अधिक स्पष्ट बनाता है। लेकिन यह युद्ध के कैदियों को उनके आशावाद से बाहर निकालने और उन्हें आने वाली आपदा के लिए आध्यात्मिक रूप से तैयार करने के लिए एक बयानबाजी की चाल है।

उसे उनके कान पकड़ने की सख्त जरूरत थी और यही एकमात्र तरीका था जिससे यह किया जा सकता था। वे अपने आशावाद में इतने दृढ़ थे कि उसे तोड़ना ही था। अगली बार हम अध्याय 17 और 19 पर विचार करेंगे।

यह डॉ. लेस्ली एलन और यहजेकेल की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 7 है, यरूशलेम की निंदा की गई, लेकिन अंततः इसे बहाल किया जाएगा। यहजेकेल 14:12-16:63।